# "मन और बुद्धि"

श्रीमती निलोफर अब्दुलसत्तार नाईकवाडी
मोबाइल नंबर : 7875691492
ई मेल आईडी: naikwadinilofar1985@gmail.com

सहसा एक बार,
बहस हो गई उस पार,
बुध्दि ने मन को चिढ़ाते हुए कह डाला इस बार,
ऐ मन, तु तो बड़ा चंचल है रे
ऐ मन, तु तो सदा भटकता है रे
ऐ मन, पर तुझसे बड़ा आज़
मैं बन गया हूँ देख ले ।।
मानव ने मुझे उपयोग कर,
क्या क्या मक़ाम हासिल किया है रे
तु तो लेकिन अपनी ही दुनिया कि मस्ती में खो गया है रे
इसलिए आज तक तुझको
कोई समझ ही न पाया है रे
सभी करते हैं बस मेरा ही बखान
मेरी ताकत को करते हैं सलाम
गुमसुम बैठे 'मन' ने 'बुध्दि' का घमंड देखा और
तुरंत जवाब में कह डाला
ऐ बुध्दि, मती तेरी मारी गई है,
जो मुझसे उलझने आई है
ऐ बुध्दि , तु इतनी घमंडी
मेरी वजह से ही तो बन पाई है
मेरी चंचलता ने ही तो तुझको
अहंकार से भर दिया है ।।
बस, इतनी–सी बात मानव, समझ ही न पाया है
अगर मानव मन ने
मुझे शांत रखा होता तो वो
मुझ तक जरुर पहुँच जाता और
मन की भावनाओं को समझकर
ईश्वर के क़रीब हो जाता
सत्य का मार्ग कभी न भूल पाता वो

क्या उचित है और क्या अनुचित भेद यह वो जान पाता
ये मन ही तो है जो उसे
समझाता है, लेकिन फिर भी वो
इन बातों को अनदेखा कर देता है
झटपट तुझ तक पहुँच कर
वहीं करता है, जो मेरी चंचलता ने उससे करने कहा होता है ।।
इसलिए तु मेरा मुकाबला
तेरे साथ कभी मत कर, वरना
तुझे मेरी ही इशारों पर ही तो
चलना होता है
बात मेरी मान ले,
अहंकार को छोड़ दें
इतना सुनते ही बुध्दि को आ गया गुस्सा और तमतमाया बोला,
चूप रह! तु मन
मुझे तेरी कोई जरूरत नहीं है
मानव आज बुध्दि से ही तो
संपन्न है, जीवन उसका
मुझसे परिपूर्ण है
अगर मानव मन की ओर चला जाता तो उस मानव की
हार तो निश्चित ही होती
तेरे झांसे में आकर उसने
अपना सबकुछ खो दिया तो
दूर खुद से ही हो जाता रे
'मन' ने 'बुध्दि' को सहलाते हुए कहा एक बार
तु कितना भी सोच ले
लेकिन मुझ में ही तो
ईश्वर का निवास है ।।
सुनकर बुध्दि ने कहा फिर
उचित है, तेरा यह कहना पर,
मानव के लिए तु तो है, सिर्फ एक खिलौना हे मन
सोच–विचार से अंतिम निर्णय
मुझको ही तो लेना है
कहा मानव ने समझाते हुए
'मन' और 'बुध्दि' को कि
तुम दोनों तो मुझमें ही समाएं हो
इसलिए अब दोनों के इस झगड़ों में
बेचारे मानव का जीवन तो कभी आर तो कभी पार हो जाता है ।